THE RIGHTEOUS JUDGE

ल्यायप्रिय जज
अल्जीररया में बावकास नाम का एक शासक था। उसने सुना था कक उसके एक शहर में एक न्यायविज्ञान जज रहता था, जो तुरंत सच्चाई को पहचान लेता था और कोई भी टुटफ उसे धोखा नहीं दे सकता था। बावकास स्वयं इस बात की सच्चाई को परखना चाहता था। इसलिए उसने एक व्यापारी का भेष धारण किया और घोड़े पर सवार होकर उस शहर के लिए रवाना हुआ जहां वो जज रहता था। नगर के प्रवेश द्वार पर एक अपाहिज बावकास के पास आया और वो उससे भीख मांगने लगा। बावकास ने उसे कुछ पैसे दिए। पर जैसे ही वो घोड़े पर चढ़ने लगा था, वैसे ही अपाह ने उसका लबादा पकड़ लिया।

“तुम क्या चाहते हैं?” बावकास ने पूछा। “क्या मैंने तुम्हें भिड़ाना नहीं दी?”

“हां, आपने दी,” अपाह ने कहा, “लेकिन मुझे एक और उपकार करें, मुझे अपने घोड़े पर बिठाकर चौराहे पर चलने को कहें, तो मैं तुम्हें ऊपर पहुँचाऊंगा।”

बावकास ने अपाह को अपने पीछे साठाया और उसे चौराहे पर ले गया। चौक पर पहुँचकर बावकास ने घोड़ा रोका। लेकिन अपाहिज नीचे नहीं उतरा। बावकास ने कहा:

“तुम वहां अब क्यों बैठे हो? नीचे उतरो, हम चौक पर पहुँच गए हैं।”

लेकिन भिड़ारी ने कहा:

“मैं क्यों उतरता, यह तो मेरा घोड़ा है; और यदि तुम यह घोड़ा नहीं छोड़ोगे, तो मैं तुम्हें जज के पास ले जाऊंगा।”
कुछ देर में कई लोग उनके घरों ओर इकट्ठे हो गये और उनकी बहस सुनने लगे। वे सभी चिल्लाये:

"जज के पास जाओ, वो ववद्वाय को सुलझा देगा!"

उसके बाद बावकास और अपिंग जज के पास गए। वहां पर पहले से ही कई लोग मौजूद थे। जज ने विवादों को निपटने के लिए उन्हें बारी-बारी से बुलाया।

बावकास की बारी आने से पहले, न्यायाधीश ने एक विवाद और एक किसान को बुलाए। वे दोनों एक महिला को लेकर झगड़ा रहे थे। किसान कह रहा था कि वो उसकी पत्नी थी, और विवाद उसे अपनी पत्नी बता रहा था। जज ने उसकी बात सुनी, फिर वो एक पल के लिए रुके और उन्हें कहा:

"महिला को मेरे पास छोड़ जाओ, अब तुम दोनों कल वापस आना।"

जब वे चले गए, तो फिर एक कसाई और एक तेल बेचने वाला आया। कसाई खून से लथपथ था, और तेल बेचने वाला तेल से। कसाई अपने हाथ में पैसे पकड़े हुए था, और तेल बेचने वाले ने कसाई की एक बांह पकड़ी थी। कसाई ने कहा:

"मैं इस आदमी से कुछ तेल खरीदा और फिर पैसे देने के लिए अपना पर्स निकाला, लेकिन उसने मेरी बांह पकड़ ली और मेरे पैसे छीनने की कोशिश की। और इसीलिए हम आपके पास आए हैं - मेरे हाथ में पर्स है, और उसने मेरी बांह पकड़ रही है। परिणाम वो पैसे मेरा है, और वो घोर है।"

लेकिन तेल विक्रेता ने कहा:

"यह सच नहीं है। कसाई मेरे पास तेल लेने आया। जब मैंने उसे पूछा तो वो हादसे फिर उसने मुझसे एक सोने के सिक्के का चिल्लर मांगा। मैौं सिक्के निकालकर काउंटर पर रखे। पर उसने पैसे लेकर भागने की कोशिश की। फिर मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे यहां से आया।"

जज एक पल के लिए रुके और बोले:

"पैसे यहीं छोड़ दो और अब कल वापस आना।"

जब बावकास और अपिंग की बारी आई, तो बावकास ने जज को पूरी ताकत बताई। जज ने उसकी बात सुनी और फिर अपिंग से उसकी कहानी पूछी। न्यायाधीश ने कहा:

"यह सच नहीं है, मैं अपने घोड़े पर सवार होकर शहर में घूम रहा था, और वो ज़मीन पर बैठा था और मुझसे उसने सवारी की बिनती की। मैं उसे अपने घोड़े पर बिठाया और वो जाना चाहता था, मैं वहां उसे ले गया, परंतु मैंने उसने उससे से इंकार कर दिया और कहने लगा कि वो उसका घोड़ा था। यह बिल्कुल सच नहीं है।"

जज ने एक पल सोचा और कहा:

"घोड़ा मेरे पास छोड़ दो और अब कल वापस आना।"

अगले हदन जज के फैसले सुनने के लिए भड़क सारे लोगों की भीड़ इकट्ठी हुई।

सबसे पहले विवाद और किसान आगे आये।

"देखो अपनी पत्नी को ले जाओ," जज ने विवाद से कहा, "और किसान को पचास कोडे मारो।"
विद्वान अपनी पत्नी को अपने साथ ले गया, और किसान को तुरंत सजा दी गई।

इसके बाद जज ने कसाई को बुलाया।

"वो पैसा तुम्हारा है," उसने कसाई से कहा। फिर उसने तेल बेचने वाले की ओर इशारा करके कहा, "उसे पत्थर कोडे मारो।"

उसके बाद जज ने बावकास और अपिंग को बुलाया।

"क्या तुम लोग अपने घोड़े को बीस अन्य घोड़ों में से पहचान पाओगे?" जज ने बावकास से पूछा।

"जी, मैं वो कर पाऊंगा।"

"और तुम?"

अपिंग ने कहा, "जी, मैं भी वो कर पाऊंगा।"

"फिर मेरे साथ चलो," जज ने बावकास से कहा।

वे अस्तबल में गये। बावकास ने तुरंत अन्य बीस घोड़ों के बीच अपने घोड़े की ओर इशारा किया।

उसके बाद जज ने अपिंग को अस्तबल में बुलाया और उसे घोड़ा पहचानने को कहा।

अपिंग ने भी घोड़ा को पहचान लिया और उसकी ओर इशारा किया। उसके बाद जज अपनी सीट पर बैठ गये और उन्होंने बावकास से कहा:

"यह घोड़ा तुम्हारा है, तुम उसे ले जाओ, और अपिंग को पचास कोडे मारे जाएं।"

कुछ देर बाद जज अपने घर लौटे, लेकिन बावकास उनके पीछे-पीछे चला।

"क्या बात है? क्या आप मेरे फैसले से खुश नहीं हैं?" जज ने पूछा।

"मेरे आपके घोड़ों में बहुत खुश हूं।" बावकास ने कहा, "लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि आपको यह कैसे पता चला कि वो महिला, विद्वान की पत्नी थी, किसान की नहीं; वो पैसा कसाई का था, तेल बेचने वाले का नहीं; और घोड़ा मेरा था, अपिंग का नहीं।"

"मुझे महिला के बारे में इस तरह पता चला: सुबह मैंने उस महिला को अपने पास लाया और मैंने उसके स्वास्थ्य की दवाओं में स्वास्थ्य भरने को कहा। उसने दवा उठाई, उसे जल्दी से इस्तेमाल, और घर आने से उसके स्वास्थ्य भरने को कहा। यदि वो किसान की पत्नी होती तो वो ऐसा नहीं कर पाती। तो, विद्वान सही था... मुझे पैसों के बारे में इस तरह पता चला: मैंने उन सिक्कों को एक कप पानी में डाल दिया और आज सुबह यह देखा गया कि पानी की सतह पर कोई तेल था या नहीं। यदि पैसा, तेल बेचने वाले का होता, तो तेल उसके स्वास्थ्य के बारे में ज्यादा लगता। पानी में कोई पानी ना था, तो जाहर था कि कसाई साफ़ कह रहा था... घोड़ों के बारे में पता लाना कुछ अधिक कठिन था। अपिंग और आप दोनों ने तुरंत अन्य बीस घोड़ों में से सही घोड़े की ओर इशारा किया। परन्तु मैं आप दोनों को अस्तबल में यह देखने के लिए नहीं ले गया था कि आप घोड़ों को पहचान पाते हैं या नहीं, परन्तु यह देखने के लिए कि घोड़ा आप में से किस को जानना और पहचानना था। जब आप घोड़े के पास गए, तो उसमें अपना सिर चुमुका और आपकी ओर कुछ आगे बढ़ा; परन्तु जब आप ने उसे चुमुका तो घोड़े ने अपने कान चपटे कर लिया और अपना पैर उठाया। इससे मुझे पता चल गया कि घोड़ों के असली मालिक आप थे।"
तब बावकास ने कहा:

“मैं कोई व्यापारी नहीं हूँ, बल्कि शासक बावकास हूँ. मैं यहाँ यह देखने आया था कि आपकी न्यायप्रियता के बारे में जो कहा जाता था वो बाक़ई में सच था या नहीं. अब मैं देख रहा हूँ कि आप बाक़ई में एक बुद्धिमान जज हैं. आप जो भी चाहें मुझसे मांगें और मैं आपको वो इनाम दूंगा.”

जज ने कहा, “महाराज, मुझे कोई इनाम नहीं चाहिए....”